Toppersnotes
Unleash the topper in you

C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उच्च प्राथमिक स्तर (विज्ञान)

भाग – 1 (स)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. अव्यय	1
2. उपसर्ग	7
3. प्रत्यय	11
4. समास	38
5. संख्याज्ञानम्	53
6. समयज्ञानम्	58
7. महेश्वरसूत्राणि प्रश्नाः	61
8. वर्ण विचार	65
9. संधि	75
10. शब्द	94
11. धातु रूप व लकार	101
12. कारक व विभक्ति	105
13. क्रिया	111
14. वाच्य	114
15. वचन	120
16. विलोम शब्द	130
17. वाक्य निर्माण	137
18. वाक्य परिवर्तन	141
19. पर्यायवाची शब्द	143
20. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	147
21. छंद	150
22. अपठित पद्यांश	161
23. अपठित गद्यांश	164
24. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	167
25. संस्कृत भाषा कौशल विकास	207
26. मूल्यांकन	217

Toppersnotes
Unleash the topper in you

समास

उपसर्ग धातु प्रत्यय

समास – समास शब्द में 'घञ्' प्रत्यय है अत: समास सदैव पुल्लिंग शब्द होता है।

* समास शब्द का शाब्दिक अर्थ 'संक्षेपण' होता है।

परिभाषा – समसनं समास: । अर्थात संक्षेपण को समास कहते हैं

समास सदैव पदों में प्रयुक्त होता है।

समास के भेद – 5 [समास: पञ्चधा]

* समास के 5 भेद होते हैं जिनका क्रमश: प्रयोग होता है।

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव समास
3. तत्पुरुष समास
4. बहुव्रीहि समास
5. द्वन्द्व समास

नपु.	पु
अम्	अ:
इ	इ:
उ	उ:

* उपर्युक्त पाँचों समासों में चार समास प्रायोगिक होते हैं 'केवल समास' अप्रायोगिक होता है।

1. **केवलसमास** – विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्त: केवल समास: प्रथम: ।

* अर्थात जो विशेष संज्ञा से मुक्त होता है वह केवलसमास कहलाता है यह समास का प्रथम भेद है।

Ex: भूतपूर्व – पूर्व भूत
वागर्थाविव – वागर्थौ इव

Toppersnotes
Unleash the topper in you

[2] अव्ययीभाव समास – " प्रायेण पूर्व पदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितिया;"

* प्राय: पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता होती है, अव्ययीभाव समास कहलाता यह समास का द्वितिय भेद होता है।

* इस समास का "सामासिक पद" नित्य रूप से नपुंसकलिंग होता है।

* इस समास का पूर्व पद अव्यय होता है जो प्रधान होता है। अत: विभक्ति उत्तरपद में लगती है।

* इस समास में 'उपसर्जन' क्रिया होती है।

उपसर्जन क्रिया – पूर्व पद को उत्तर पद में लिखना ही उपसर्जन क्रिया कहलाती है।

* इस समास में अन्त में अव्यय का अर्थ लिखना आवश्यक होता है

नपु: → अम्, इ, उ

Ex:-

सामासिक पद	समास-विग्रह
अधिहरि	हरौ इति
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्
समुद्रम्	मद्राणां समृद्धि:
दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धि:
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभाव:
अतिहिमम्	हिमस्य अत्यय:
अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते
इतिहरि	हरिशब्दस्य प्रादुर्भाव:

Toppersnotes
Unleash the topper in you

द्रविड़ आति – मद्र (कुत्सित)

सामासिक पद		समास विग्रह
अनुविष्णु	–	विष्णोः पश्चात्
आनुज्येष्ठम्	–	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण
यथाशक्ति	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य:
प्रत्येकम्	–	एकम् एकं प्रति
अनुरूपम्	–	रूपस्य योग्यम्
सहरि	–	हरेः सादृश्यम्
सचक्रम्	–	चक्रेण युगपत:
ससखि	–	सख्या सदृश:
सक्षत्रम्	–	क्षत्रियाणां सम्पत्ति:
सतृणम्	–	तृणम् अपि अपरित्यज्य:
साग्नि	–	अग्निग्रन्थपर्यन्तम् अधीते

अति+कर्ता ⇒ अत्यय (नाश)

अति+क्रिया ⇒ सम्प्रति

		अव्यय	अर्थ	विभक्ति
1.	हरि में –	अधि	इति	VII
2.	कृष्ण के समीप –	उप	समीपम्	VI
3.	मद्र लोगों की समृद्धि।–	सु	समृद्धि:	VI
4.	यवन लोगों की दुर्गति।–	दुर्	व्यृद्धि: (दुर्गति)	VI
5.	मक्खियों का अभाव।–	निर्	अभाव:	(VI)
6.	वर्फ का नाश –	अति +कर्ता	अत्यय: (नाश)	(VI)
7.	निद्रा इस समय अनुपयुक्त है –	अति+क्रिया	असम्प्रति: सम्प्रति न युज्यते इस समय अनुपयुक्त	(I)
8.	हरि शब्द का प्रादुर्भाव।–	इति	शब्दस्य प्रादुर्भाव	(VI)
9.	विष्णु के पीछे।–	अनु+सेना	पश्चात	(VI)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

10.	ज्येष्ठता [बड़ा] के क्रम से	अव्यय: आनुपूर्व्येण	अर्थ: क्रमता	विभक्ति: (VI)	वीप्सा - आवृति
11.	शक्ति के अनुसार		अनतिक्रम्य	I	
12.	हर एक	प्रति	वीप्सा (आवर्ती/आवृत्ति)	I	
13.	रूप के योग्य	अनु+विशेषण	योग्यम	VI	
14.	हरि के समान	स+हरि	सादृश्यम	VI	
15.	चक्र के साथ	स+चक्रम	युगपत	III	
16.	मित्र के जैसा	स+सखि	सदृश	III	
17.	क्षत्रियों की सम्पत्ति	स+क्षत्रम	सम्पत्ति	VI	
18.	तिनको को भी नहीं त्यागा	स+तृणम	अपि अपरित्याग	II	
19.	अग्नि ग्रन्थ तक अध्ययन किया	स+अग्नि	ग्रन्थपर्यन्तम् अधीति	I	

अनु + संज्ञा ⇒ पश्चात

अनु + विशेषण ⇒ योग्यम

तृणम - तिनका

1. अभिगङ्गम् - गङ्गायाम् प्रति
2. उपराजम् - राज्ञः समीपम्
3. उपगङ्गम् - गङ्गाया समीपम्
4. निर्धनम् - धनस्य अभाव
5. निर्गुणम् - गुणस्य अभाव!
6. निर्विघ्नम् - विघ्नानाम् अभाव!
7. निर्जनम् - जनानाम् अभाव!
8. अनुगुरु - गुरोः पश्चात्
9. अनुगुणम् - गुणस्य योग्यम्
10. प्रतिदिनम् - दिनं दिनं प्रति
11. आनुकनिष्ठम् - कनिष्ठस्य आनुपूर्व्येण

12. अध्यात्मम् — आत्मनि इति
13. अतितमम् — तमस्य अत्यम
14. अतिज्ञानम् — ज्ञानस्य अत्यम
15. अतिहसनम् — हसनं अभाव
16. अतिपठनम् — पठनं इति

NOTE :- पूर्वपद संख्या वाची व उत्तरपद संज्ञावाची हो तो "द्विगु" समास होता है।

* पूर्व पद संख्या वाची और उत्तर पद में नदी विशेष का नाम हो तो "नदीभिश्च सूत्र" से अव्ययीभाव समास होता है

Ex!-

पञ्चगङ्गम - पञ्चानां गङ्गाना समाहार!

द्विभमुनम् - द्वयो : मुनयो!

[3:] तत्पुरुष समास "प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीय!"

* प्राय: उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता होती है वह तत्पुरुष समास कहलाता है। यह समास का तृतीय भेद है।

* तत्पुरुषभेद! कर्मधारय: |
* कर्मधारयभेदो द्विगु: |
* अर्थात तत्पुरुष समास का भेद कर्मधारय, तथा कर्मधारय का भेद द्विगु होता है

सामासिक पद	समास-विग्रह	
कृष्णाश्रित:	कृष्णं श्रित:	द्वितीया विभक्ति
कृष्णाश्रित:	कृष्णम् आश्रित:	
सुखगत:	सुखं गत:	
ग्रामगत:	ग्रामं गत:	
नरकपतित:	नरकं पतित:	
कूपापत्य:	कूपम् अपत्य	
कष्टापन्न	कष्टम् आपन्न	
शाकुलाखण्ड	शाकुलया खण्ड:	तृतीया विभक्ति
नखभिन्न:	नखै भिन्न:	
नखनिर्भिन्न:	नखै: निर्भिन्न:	
हरित्रात:	हरिणा त्रात:	
धान्यार्थ:	धान्येन अर्थ:	
पादोनम्	पादेन ऊनम्	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामासिक पद	समास विग्रह	
यूपदारु :	यूपाय दारु :	
भूत बलि :	भूतेभ्य : बलि :	
गोहितम्	गोभ्य : हितम्	- चतुर्थी विभक्ति
गोसुखम्	गोभ्य : सुखम्	
गोरक्षितम्	गोभ्य : रक्षितम्	
द्विजार्थम्	द्विजाय अर्थम् इति	

चोर भयम्	चोरात् भयम्	
दूरादागत :	दूरात् आगत :	
अन्तिकादागत :	अन्तिकात् आगत :	पञ्चमी विभक्ति
स्तोकान्मुक्त	स्तोकात् मुक्त :	
विद्याहीन	विद्याया : हीन :	
स्वर्गपतित :	स्वर्गात् पतित :	
गुणहीन :	गुणात् हीन :	

राजपुरुष	राज्ञ : पुरुष	
हिमालय	हिमस्य आलय :	
विद्यालय	विद्याया : आलय :	→ षष्ठी विभक्ति
शिवालय	शिवस्य आलय :	
रत्नाकर :	रत्नानाम् आकर :	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अक्षशौण्ड	अक्षेषु शौण्ड:	→ सप्तमी विभक्ति
कर्मकुशल	कर्मणि कुशल:	
व्याकरण निपुण	व्याकरणे निपुण:	

असत्यम्	न सत्यम्	→ नञ् तत्पुरुष
अब्राह्मण:	न ब्राह्मण:	
अनश्व	न अश्व:	
अनुदात्त:	न उदात्त:	
अकुशल	न कुशल:	
अस्वस्थम्	न स्वस्थम्	
अननुनासिकम्	न अनुनासिकम्	

प्राचार्य:	प्रगत: आचार्य:	→ गति/प्रादि तत्पुरुष
कुपुरुष:	कुत्सित: पुरुष:	
सुपुरुष:	शोभन: पुरुष:	
निरङ्गुलम्	निर्गतम् अङ्गुलीभ्य:	

कुम्भकार:	कुम्भं करोति	→ उपपद तत्पुरुष
स्वर्णकार:	स्वर्णं करोति	
रत्नकार:	रत्नं करोति	
जलजम्	जले जायते	
पङ्कजम्	पङ्के जायते	
सरोजम्	सरसि जायते	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कर्मधारय समास - विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।

* जहाँ विशेष्य से विशेषण की बहुलता होती है वह कर्मधारय समास कहलाता है।

* यह स्वतंत्र समास का भेद न होकर तत्पुरुष समास का भेद होता है।

* इस समास का पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है।
अतः कर्मधारय समास में विशेष्य प्रधान होता है। क्योंकि तत्पुरुष समास में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता होती है।

पतित - गिरना
आपन्न - दुःखी
अपन्न - गिरना
अत्यय - नाश
ऊनम - कम
पाद - 1/4
द्विज - ब्राह्मण
स्तोक - थोड़ा/कम
रत्नाकर - समुद्र
अहः - दिन
शौण्ड - पासा

NOTE:- विशेषण का स्वयं का कोई लिंग, विभक्ति, वचन नहीं होता है जो विशेष्य का विभक्ति, वचन, लिंग होता है वही विशेषण का होता है।

Ex:-

सामासिक पद	समास विग्रह
नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्
पीताम्बरम्	पीतम् अम्बरम्
घनश्यामः	घनः इव श्यामः
कृष्णसर्पः	कृष्णः चासौ सर्पः
प्रधानाचार्यः	प्रधानः चासौ आचार्यः
महाराजा	महान् चासौ राजा
महर्षिः	महान् चासौ ऋषिः
देवब्राह्मणः	देवपूजकः ब्राह्मणः

सामासिक पद	समास-विग्रह
शाकपार्थिव:	शाकप्रिय: पार्थिव:
चन्द्रमुखम्	चन्द्रम् इव मुखम्

द्विगु समास - "संख्यापूर्वो द्विगु: ।

* पूर्व पद संख्यावाची तथा उत्तरपद संज्ञावाची हो तो वहाँ द्विगु समास होता है। यह समास समाहार (समूह) अर्थ में प्रयुक्त होता है।

Ex:-

सामासिकपद	समासनविग्रह
अष्टाध्यायी	अष्टानाम् अध्यायानां समाहारं
शताब्दी	शतानाम् अब्दानां समाहारं
सप्ताह	सप्तानाम् अह्नानाम् समाहारं
पञ्चवटी	पञ्चानाम् वटानाम् समाहारं
त्रिलोकम्	त्रयाणां लोकानां समाहारं
पञ्चरात्र	पञ्चानां रात्रीणां समाहारं
द्विरात्रम्	द्वयो: रात्र्यो: समाहारं
पञ्चपत्रम्	पञ्चानां पत्राणां समाहारं
पञ्चपात्रम्	पञ्चानां पात्राणां समाहारं
चतुर्भुजम्	चतुर्णां भुजानां समाहारं
द्विगु	द्वयो: गवो: समाहारं

NOTE!- मुनि शब्द यदि जातिवाचक संज्ञा का हो तो समूह अर्थ में द्विगु समास होता है। और मुनि शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा का हो तो अव्ययीभाव समास होता है (अर्थात सामासिक पद में (:) विसर्ग लगा हुआ हो तो अव्ययीभाव समास होगा।

परन्तु (:) विसर्ग का लोप हो तो द्विगु समास होगा।

Ex:-

द्विमुनिः → दो मुनी
त्रिमुनिः - त्रयः मुनयः
} अव्ययीभाव समास

द्विमुनि - द्वयो: मुन्योः समाहारं
त्रिमुनि - त्रिमुनि त्रयाणां मुनीनां
} → द्विगु समास

(4) बहुव्रीहि समास - प्रायेणा अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिश्चतुर्थः।

* प्रायः अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है वह बहुव्रीहिसमास कहलाता है यह समास का चतुर्थ भेद होता है।

* बहुव्रीहि समास का सामासिक पद विशेषण होता है तथा जो अन्य अर्थ निकलता है वह विशेष्य होता है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Ex:-

	सामासिक पद	समास - विग्रह
	कण्ठेकाले :	– कण्ठे कालः यस्य सः
	चक्रपाणि :	– चक्रं पाणौ : यस्य सः
पिनाक - धनुष / पाणि - हाथ	पिनाकपाणि :	– पिनाकं पाणौ : यस्य सः
	चन्द्रशेखर :	– चन्द्रं शिखरौ : यस्य सः
	पीताम्बर :	– पीतम् अम्बरं : यस्य सः
	लम्बोदर :	– लम्बम् उदरं : यस्य सः
	दशानन :	– दश आननानि यस्य सः
	चतुर्भुज :	– चतुर्णां भुजानां : यस्य सः
लम्बे है कान जिसके वह	लम्बकर्णः	– लम्बौ कर्णौ : यस्य सः
रंग-बिरंगी गायें हैं जिसकी वह	चित्रगु :	– चित्राः गावः यस्य सः
वृक्ष का विशेषण →	प्रपर्ण :	– प्रपतितानि पर्णानि यस्मात् सः
कल चुका है धन जिससे वह	निर्धन :	– निर्गतं धनं यस्मात् सः
अपुत्र - निस्सन्तान * / हिन्दी में → निपुत्र	अपुत्र :	– अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः
विशाल हृदय है जिसका वह	व्यूढोरस्क :	– व्यूढम् उरं यस्य सः
वीर पुरुष है जिस गाँव के वह	वीरपुरुषक :	– वीराः पुरुषाः यस्य सः
	जलजाक्षी	– जलजे अक्षिणी यस्य सा
संख्या में प्रयुक्त → मीने	मीनाक्षी	– मीने अक्षिणी यस्याः सा (मीनं)
	चन्द्रमुखी	– चन्द्रं मुखं यस्याः सा
	सुहृद :	– शोभनं हृदयं यस्य सः
	दुहृद :	– दुष्टं हृदयं यस्य सः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामासिक पद		समास - विग्रह
प्रियसर्पिष्क :	–	प्रियं सर्पि: यस्य स ।
उत्काकुद्	–	उद्गतं काकुदं यस्य स ।
अन्तर्लोम	–	अन्त: लोमानि यस्य स ।
बहिर्लोम	–	बहि: लोमानि यस्य स ।
विकाकुद्	–	विगतं काकुदं यस्य स ।

NOTE -: अपुत्र: में सदैव बहुव्रीहि समास होता है नञ् तत्पुरुष नहीं
क्योंकि अपुत्र: शब्द का अन्य अर्थ निःसन्तान होता है।

काकल – कण्ठ
काकुद – मसूडे (तालु)
विगतं – विकृत
लोम – जटा

चतुर्भुज : → बहुव्रीहि
चतुर्भुजम → द्विगु [संख्या]

निर्धन : → बहुव्रीहि
निर्धनम् : → अव्ययीभाव

पीताम्बर: → बहुव्रीहि
पीताम्बरम् → अव्ययीभाव

चन्द्रमुखी – बहुव्रीहि
चन्द्रमुखम् – कर्मधारय

* इस समास में सामासिक पद स्वतंत्र रूप से प्रायोगिक नहीं होता ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(5) द्वन्द्व समास - प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः ।

* प्रायः पूर्व पद व उत्तर पद दोनों के अर्थ की प्रधानता होती है वह द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समास का पञ्चम भेद होता है।

* द्वन्द्व समास विभाजन अर्थ में प्रयुक्त होता है अर्थात् 'चार्थे द्वन्द्वः'।

द्वन्द्व समास के भेद — 3

(1.) इतरेतर द्वन्द्व समास (2.) समाहार द्वन्द्व समास (3.) एकशेष द्वन्द्व समास

(1.) इतरेतर द्वन्द्व समास

* जहाँ भिन्न-भिन्न अर्थ में पद होते हैं। वह इतरेतर द्वन्द्व समास कहलाता है।

* इस समास के सामासिक पद में अन्तिम पद के लिंग के अनुसार वचन का प्रयोग होता है।

Ex:-

सामासिक पद	समास-विग्रह
रामलक्ष्मणौ	रामः च लक्ष्मणः च [रामश्च लक्ष्मणश्च
कृष्णार्जुनौ	कृष्णः च अर्जुनः च
हरिहरौ	हरिः च हरः च
धर्मार्थकाममोक्षाः	धर्मः च अर्थः च कामः च मोक्षः च
सीतारामौ	सीता च रामः च
मातापितरौ	माता च पिता च
सीतागीते	सीता च गीता च
पत्रपुष्पफलानि	पत्रं च पुष्पं च फलं च

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(2) समाहार द्वन्द्व समास

* जहाँ पूर्णतः संख्या विभाजन न होकर समूह का बोध करवाती है वह समाहार द्वन्द्व समास कहलाता है

* इसका सामासिक पद "नित्य नपुंसकलिंग" होता है

त्वक् – त्वचा
स्रक् – गोटे/काटे

Ex:-

सामासिक पद	समास-विग्रह
पाणिपादम्	पाणी च पादौ च
छात्रोपहनम्	छात्रः च उपहनौ च
त्वक्स्रजम्	त्वक् च स्रक् च
सर्पनकुलम्	सर्पः च नकुलः च

(3) एकशेष द्वन्द्व समास

* इसमें विग्रहित दोनों पदों के स्थान पर एक पद शेष रहता है। जो पद शेष रहता है वह पुल्लिंग का द्विवचन होता है जिसके समास विग्रह में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दोनों का उल्लेख होता है

Ex:-

पितरौ – माता च पिता च
पुत्रौ – पुत्री च पुत्रः च

NOTE:-
विशेष – पूर्व पद संख्यावाची व उत्तर पद भी संख्यावाची हो तो द्वन्द्व समास होता है

Ex:- अष्टादश – अष्टौ च दश च
द्वादश – द्वौ च दश च